

DPN 7016

Title: *ग्राह्य शांति विधि-*
GRAHA DĀŚĀ ŚĀNTI VIDHI

Run. No. 7741

Cat. No.

Micro. No.

Subject *विधि propitiatory ritual*

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt.- New. / Maith.- New. / New.- Nep. / *नेपाल भाषा, लिपि, ९*

Size in cms. 11.8 x 43.5

Folios /

Lines (in a page) 11 *new direction*

Compl. / Incompl. ✓

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / paper / thyasaphu /

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

→ →

१	कुं तां ध विव ॥	मावासा दानविय ॥
२	कुं डि हा नि शू व ॥	
३	व न ना न शू व ॥	निलयण विय ॥
४	हू नि शू व ॥	सूर्य विम्व विय ॥
५	स य द शू व ॥	नू ग म स पू डा ॥
६	कु वि था न शू व ॥	सूर्य कु म न विय ॥
७	स क स ना प ॥	मावासा दानविय ॥
८	ना ना इ शू व द शू व ॥	गृह प ति निलयण विय ॥

रघुहृत्ति यदममयुक्तं ननाली चका मय
 चिजयं प्रियमिणाली रस्तनं नरमा विरति ह
 विना सनयुक्तं सूर्याददाति विदुना धनमानसाग
 न॥ सूर्याया॥

१ प्राणीशूयव॥ तिलपागदानविय॥
 २ धनहानिशूयव॥ ग्रहपतिविय॥
 ३ विदमजानताविय॥ ज्ञांयलघनविय॥
 ४ मनलशूयव॥ उद्धविन्नविय॥
 ५ विवादमनलशूय॥ क्रीनद्यटविय॥
 ६ मलशूयव॥ जलद्यटविय॥
 ७ धनहानिशूयव॥ जलदानविय॥

॥ कादमयदमसकृत्तयवकुलप
गमिणधनकाकेनवकुलार्णवस्थानं
हर्षशयनासनमोनामनन्धानिददा
तिविपलक्ष्यदवयव ॥ ॥ वन्द्या ॥

मार्गशूयूव॥	धनदायकविय॥
धनहानिशूयूव॥	गुरुयगविय॥
पितृप्रकाय॥	गुरुधनविय॥
मित्रास्त्रयूव॥	गुरुयगविय॥
हिंवादनविशूव॥	श्रीं नययूव॥
अनिष्टदानयूव॥	गुरुयगविय॥
कलनयूव॥	गुरुधनविय॥
धनहानिशूयूव॥	कलदानविय॥

(उ) काय हास्यादहायक रूपाय नारामो ही मत्र विजयं यद
 मर्थसिद्धिर्निर्वाणुर्लभ्ययस्वस्वमरुतस्य कल्याणः
 निगधनधीनस्वस्वस्य कल्याणः ॥ ... ॥ हो मया ॥

रयदयूडा॥ अगमसयूडायाय॥
 अनासइयव॥ लंग्रहयतिविय॥
 लतरयद ॐडा॥ ॐदवतापूडा॥
 लीकलरयूयव॥ अगमसयूडा॥ विष्णुका॥
 १॥ श्रीद्वितीयः प्रबुद्धस्य केमके प्रकाश उदसमेक
 नाति कदिन १११॥ अर्थात् प्रबुद्धस्य उदसमेक
 प्रबुद्धसमर्थजनप्रयुक्ती॥ वक्ष्या॥

۱۲

वृद्धिहानिशूत्रं पाथयावकं ॥
 कक्षशूत्रं ॥ ॐ कक्षवतापूजा ॥
 मन्त्रसामयन्त्रं ॥ ॥ ग्रहपतिवियं ॥
 मन्त्रवैद्यनक्षत्रं ॥ ॐ कक्षवतापूजा ॥
 हानिसंज्ञाशूत्रं पाथयावकं ॥
 धर्मसंज्ञाशूत्रं पाथयावकं ॥
 संज्ञापञ्चदश्यां पाथयावकं ॥
 एकादश्यादिनवयकं संज्ञासंज्ञं ॥
 उदिविधननक्षत्रपञ्चमं नक्षत्रवृद्धिचरित्रं
 सप्ततागुत्रपञ्चमं धर्मार्थिकामपि
 वृद्धिमानशासनं ॥ गुत्रया ॥ ॥

कलहषाउत्रपू॥ सलादानविय॥
 मुविथागधननोसुग्रहयतिविय॥
 धनरुनिशयूत्र॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय॥
 एकद्विपत्रेयउत्राकनवणीत्रभूमका
 दण्डकृष्णदण्डसदवउक्राक्यातुत्रवः
 मुधनकाकेननवल्लारुसमानदागविविध
 सयनायलान्नु॥ उक्रया॥ ॐ॥

वषट्कार्यं मुखं रूपा॥ पाथयात्रकं॥
 धनहानिशूयं॥ ग्रहपतिवियं॥
 मित्रविधागं॥ जनपागवियं॥
 पूगविशागं॥ सादानवियं॥
 मुनिविधागं॥ पा०यात्रकं॥
 शंकराय॥ ग्रहपतिवियं॥
 धननाशदूर्घयय॥ पीथसपूजायाय॥
 धनहानिशूयं॥ ग्रहपतिवियं॥
 एकादश्याय दशमके रतियुक्तं निप्रमा
 मधिलासमधिपक्यातिस्वनं धनापययमर
 धिकं केलां वृद्धिनामपययं केहरयके

[illegible]